षट्खंडागम पुस्तक-९ (फोल्डर नं. ००१४०३)

मुख्य टाइटल
विषयसूची
प्राक्कथन ---------- १
Introduction
विषय परिचय ---------- १
कृति अनुयोगद्वारकी विचषय-सूची ---------- ५
शुद्धिपत्र ---------- ९
मूल, अनुवाद और टिप्पण बन्ध-स्वामित्व परिचय ---------- १-४५२
धवलाकारका मंगलाचरण ---------- १
वेदना खण्डके प्रारम्भें भगवान् भूतबलि द्वारा किया गया मंगल ---------- २-१०३
मंगलका स्वरूप व उसाक प्रयोजन ---------- २
नामादिकके भेदसे चार प्रकारके जिनोंका स्वरूप ---------- ६
उक्त चार भेदोंमें विभक्त.... ---------- ८
देश व सकल जिनोंका स्वरूप ---------- १०
अवधिजिन-नमस्कारमें अवधि शब्दके अर्थपर विचार ---------- १२
जघन्य अवधिके विषयभूत द्रव्यकी प्ररूपणा ---------- १४
जघन्य अवधिज्ञानके विषय भूतक्षेत्रकी प्ररूपणा.... ---------- १७
सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना.... ---------- २१
जघन्य अवधिज्ञानके विषय भूत कालकी प्ररूपणा ---------- २६
जघन्य अवधिके विषयभूत... ---------- २७
अवधिके विषयभूत द्रव्य.... ---------- २८
देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र .... ---------- ३५
अवधिजनोंका स्वरूप ---------- ४०
परमावधिजिन-नमस्कारमें... ---------- ४१
परमावधिके विषयभूत द्रव्य,,.... ---------- ४२
सर्वावधिजिन-नमस्कारमें.... ---------- ४७
सर्वावधइके विषयभूत द्रव्य.... ---------- ४८
अनन्तावधिजिन लनमस्कारमें ---------- ५१
कोष्ठबुद्धि ऋद्धि धारकोंका.... ---------- ५३
बीजबुद्धि ऋद्धि धारकोंका.... ---------- ५५
पदानुसारी ऋद्धिका स्वरूप.... ---------- ६०
सम्भिन्नश्रोतृ ऋद्धिका स्वरूप ---------- ६१
ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानका स्वरूप.... ---------- ६२
विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानका.... ---------- ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशपूर्व ऋद्धि धारकोंके भेद.... ---------- ६९
चतुर्दशपूर्व ऋद्धि धारकोंका स्वरूप---------- ७०
आठ महानिमित्तोंका स्वरूप ---------- ७२
विक्रिया ऋद्धिके आठ भेद व उनका स्वरूप---------- ७५
विद्याधरजिन नमस्कारमें जाति..... ---------- ७७
चारण ऋद्धि धारकोंके आठ भेद व उनका स्वरूप ---------- ७८
अन्य चारण ऋद्धि धारकोंका.... ---------- ८१
प्रज्ञाश्रवणनमस्कारमें प्रज्ञाके.... ---------- ८१
आकाशगमित्व ऋद्धिका स्वरूप ---------- ८४
आशीर्विष ऋद्धि धारकोंका ---------- ८५
दृष्टिविष व दृष्टि-अमृत.... ---------- ८६
उग्रतप ऋद्धि धारकोंके भेद... ---------- ८७
महातप ऋद्धि धारकोंका स्वरूप---------- ९१
घोरतप ऋद्धि धारकोंका स्वरूप ---------- ९२
घोरपराक्रम और घोरगुण ऋद्धि.... ---------- ९३
अघोरगुणब्रह्मचारियोंका स्वरूप ---------- ९४
आमर्षौषधि ऋद्धि---------- ९५
खेलोषधि ऋद्धि ---------- ९६
जल्लौषधि ऋद्धि---------- ९६
विष्ठौषधि ऋद्धि ---------- ९७
सर्वौषधि ऋद्धि---------- ९७
मनोबल ऋद्धि---------- ९८
वचनबल ऋद्धि---------- ९८
कायबल ऋद्धि ---------- ९९
क्षीरस्रवी ऋद्धि ---------- ९९
सर्पिस्रवी ऋद्धि---------- १००
मधुस्रवी ऋद्धि ---------- १००
अमृतस्रवी ऋद्धि ---------- १०१
अक्षीणमहानस ऋद्धि---------- १०१
सर्व सिद्धायतनोंको नमस्कार---------- १०२
वर्धमान बुद्धर्षिको नमस्कार---------- १०३
भूतबलि भट्टारक द्वारा किया गया मंगल...---------- १०३
यह मंगल वेदना, वर्गणा और महाबंध...---------- १०५
निमित्त हेतु, नाम व प्रमाणकी प्ररूपणा ---------- १०६
कर्तृप्ररूपणा ---------- १०७-१३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यसे अर्थकर्ताकी प्ररूपणामें भगवान महावीरके शरीरका वर्णन---------- १०७
क्षेत्र प्ररूपणामें समवसरण मण्डलका वर्णन---------- १०९
वर्धमान भगवान्की सर्वज्ञता---------- ११३
भावप्ररूपणामें जीवकी सचेतनतासिद्धि---------- ११४
जीवकी ज्ञान-दर्शनस्वभावता ---------- ११६
कर्मोंकी अनित्यता ---------- ११७
तीर्थोत्पत्तिकाल---------- ११९
भगवान् महावीरका गर्वतरणकाल---------- १२०
केवलज्ञान प्राप्त हो जानेपर भी दिव्यध्वनि न खिरनेका कारण ---------- १२०
वर्धमान भगवान् की आयुपर मतभेद...---------- १२१
ग्रन्थकर्ताकी प्रूपणामें गणधरका स्वरूप---------- १२६
वर्धमान भगवान्के तीर्थमें ग्रन्थकर्ता.... ---------- १२९
उत्तरोत्तरतंत्रकर्ता की प्ररूपणामें केवली....---------- १३०
शक राजा का समय---------- १३२
भूतबलि भट्टारक द्वारा षट्खण्डागमकी रचना ---------- १३३
कृति वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंका निर्देश ---------- १३४
उपक्रमका स्वरूप व उसके भेद-प्रबेदादि ---------- १३४
निक्षेपस्वरूप ---------- १४०
अनुगमप्ररूपणामें प्रमाण का स्वरूप व उसके भेद.... ---------- १४१
नयप्ररूपणा---------- १६२-१८३
नयस्वरूपका विचार---------- १६२
द्रव्यार्थिकनयकी प्ररपूपणामें....---------- १६७
पर्यायार्थिकनयके भेदोंमें ऋजुसूत्र.... ---------- १७१
शब्दनयका स्वरूप---------- १७६
समभिरूढ़नयका स्वरूप---------- १७९
एवम्भूतनयका स्वरूप ---------- १८०
अर्थनय व शब्दनयका स्वरूप---------- १८०
नैगमनयके तीन बेद व उनका स्वरूप---------- १८१
नयोंकी समीचीनता व असमीचीनता ---------- १८२
उपनयका स्वरूप ---------- १८२
सात सुनयवाक्य---------- १८३
अग्रायणी पूर्वका उद्गम---------- १८४-२२५
ज्ञानका उपक्रमादि रूप...---------- १८४
श्रुतज्ञानके चतुर्विध अवतारमें...---------- १८६
अंगश्रुतके चतुर्विध अवतारमें... ---------- १९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दृष्टिवादके चतुर्विध अवतारमें... ----२०४
सूत्रका पदप्रमाण व विषय ----२०७
प्रथमानुयोगका पदप्रमाण व विषय----२०८
पर्वकृतका पदप्रमाण व विषय----२०९
पांच प्रकार चूलिकाओंका पदप्रमाण व विषय----२०९
पूर्वगतके चतुर्विध अवतारमें..... ----२१०
अग्रायणी पूर्वका चतुर्विध अवतार ----२२५
चयनलब्धिका चतुर्विध अवतार----२२७
कर्मप्रकृतिप्राभृतका चतुर्विध अवतार ----२२९
चयनलब्धिके कृति व वेदना आदि.... ----२३१
कृतिके सात भेदोंका निर्देश----२३७
कृतियोंकी नयविषयता----२३८
नामकृतिकी प्ररूपणामें... ----२४६
स्थापनाकृतिकी प्ररूपणामें.... ----२४८
आगमद्रव्यकृतिकी प्ररूपणामे..... ----२५१
वाचनाका स्वरूप व उसके चार भेद ----२५२
व्याख्याताओं व श्रोताओंके लिये.... ----२५३
सूत्रसम आदिका स्वरूप ----२५९
उक्तस्थित-जित आदि नौ अधिकारविषयक...----२६२
कृतिके विषयमें आठ प्रकारक उपयोगी प्ररूपणा----२६३
नैगमादिक नयोंकी अपेक्षा..... ----२६४
नोआगमद्रव्यकृतिके तीन भेदोंमें.... ----२६७
ज्ञायकशरीरद्रव्यकृतिका स्वरूप ----२६९
भावी नोआगमद्रव्यकृतिका स्वरूप----२७१
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकृतिके ग्रन्थिम-वाइम आदि.... ----२७२
गणनकृतिप्ररूपणा---- २७४-३२१
गणनकृतिका स्वरूप व उसके भेद ----२७४
कृति, नोकृति व अवक्तव्य...----२७७
द्रव्यप्ररूपणानुगम----२८१
क्षेत्रानुगम ----२८५
स्पर्शनानुगम----२८७
कालानुगम ----२९१
अन्तरानुगम ----३०४
आवानुगम ----३१५
अल्पबहुत्वानुगम ----३१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थकृतिका प्ररूपणा ---------- ३२१
करमकृतिप्ररूपणा---------- ३२४-४५१
मूलकरणकृतिकेभेद---------- ३२४
औदारिक, वैक्रियिक व आहारकशरीर...---------- ३२६
तैजस व कार्मणशरीर सम्बन्धी... ---------- ३२८
मूलकरणप्रकृतियोंकी प्ररूपणामें पदमीमांसा... ---------- ३२९
स्वामित्व---------- ३२९
अल्पबहुत्व ---------- ३४६
सत्प्ररूपणा ---------- ३५४
द्रव्यप्रमाण ---------- ३५८
क्षेत्रानुगम ---------- ३६४
स्पर्शनानुगम---------- ३७०
कालानुगम ---------- ३८०
अन्तरानुगम ---------- ४०२
भावानुगम---------- ४२८
स्वस्थान अल्पबहुत्व---------- ४२९
परस्थान अल्पबहुत्व ---------- ४३८
उत्तरकरणकृतिका स्वरूप व भेद ---------- ४५०
भावकृतिका स्वरूप---------- ४५१
गणनकृतिकी प्रधानता---------- ४५२
परिशिष्ट
कृतिअनुयोगद्वार-सूत्रपाठ---------- १
अवतरण गाथा सूची---------- ४
न्यायोक्तियां---------- ७
ग्रन्थोल्लेख ---------- ७
ऐतिहासिक नाम-सूची ---------- ९
भौगोलिक शब्द-सूची ---------- १०
पारिभाषिक शब्द-सूची---------- १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org